मासिक पत्रिका नवम्बर 2023

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश –1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH–GREATER KAILASH–I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 • E-mail: samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल (प्रधान) — राजेन्द्र कुमार वर्मा (मंत्री) — अरुण बहल (कोषाध्यक्ष)

आर्य समाज क्या है?

साभार: राजेन्द्र विद्यालंकार

आर्यसमाज के सम्बंध में कई धारणायें हैं, भ्रान्तियाँ और उसका निवारण।

आर्य समाज में कई धारणायें हैं जिसका इस लेख में स्पष्टिकरण किया जा रहा है। कोई भी तर्कहीन परम्परा समाज के लिये सबसे बड़ा खतरा है। सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये – यह आर्य समाज का मूल मंत्र है। विभिन्न विषयों पर आर्य समाज का निम्न दृष्टिकोण है।

आर्य समाज एक क्रन्तिकारी आन्दोलन है जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में फैले विभिन्न–प्रकार के पाखंड, मत–मतान्तर, जाति–पाती, अनेक–प्रकार के सम्प्रदायो, मूर्ति–पूजा आदि अन्धविश्वास को दूर करने वाला एक विश्वव्यापी आन्दोलन है। इसके प्रवर्तक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती हैं।

ईश्वर– ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त निर्विकार, सर्वव्यापक, अनुपम, सर्वाधार और सृष्टिकर्ता आदि गुणों से युक्त है। एक मात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

वेद– वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद की समस्त शिक्षाएं व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं सृष्टि नियमों में साम्य रखती है। अत: वेद स्वत: प्रमाण हैं। संसार के सभी स्त्री पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार है। मध्यकालीन ग्रन्थों एवं परम्परा में स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन से वंचित करना हमारे इतिहास का कलंकित अध्याय है।

मध्यकालीन वेद भाष्यकारों उव्वट, महीधर और सायण आदि विद्वानों द्वारा वेद मन्त्रों का पशुहिंसा, श्राद्ध, अश्लीलता परक व्याख्यान तथा पाश्चात्य भाष्यकारों द्वारा वेद को गडरियों के गीत बताना एवं उनमें लौकिक इतिहास सिद्ध करना दुराग्रह मात्र है, यथार्थ नहीं।

आर्यसमाज प्रभु राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण को महापुरुष की श्रेणी में रखता है। अपना आदर्श मानता है। अपना पूर्वज मानता है। उनके बताये रास्ते पर चलने का आग्रह करता है। किन्तु इनकी मूर्ति बना कर पूजने को इन महापुरुषों का अपमान मानता है। ये महापुरुष भी परमपिता परमात्मा की ही उपासना करते थे।

यह गलत है कि आर्यसमाज ऋषि दयानंद के अतिरिक्त किसी अन्य महर्षि को महत्त्व नहीं देता।

महर्षि ने स्वयं कहा कि यदि मै ऋषि कणाद या ऋषि जैमिनी के काल में होता तो उनके समक्ष मैं अपने आप को कुछ भी नहीं मानता। यानी ऋषि के हृदय में अपने सभी वैदिक ऋषियों के प्रति असीम सम्मान था। आर्यसमाज भी समस्त वैदिक ऋषियों के प्रति सम्मान रखता है। इसमें आदि गुरुशंकराचार्य जी भी है जिन्होंने वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना की और समाज को अवैदिक अर्थात् पाखण्ड के मार्ग पर जाने से बचाया।

यह गलत है कि आर्यसमाज अन्य विचारधारों का सम्मान नहीं करता।

आर्यसमाज अन्य विचारधाराओं का सम्मान करता है एवं उनकी उपयोगिता से परिचित है। आर्यसमाज समझता है कि मनुष्य का एक ही धर्म है जो वैदिक आलोक में हो किन्तु समाज में एक सी बुद्धि न होने के कारण विचारधारा भिन्न हो सकती है। आर्यसमाज वेदों का विरोध करने वाले बुद्ध को भी "महात्मा" बुद्ध कहता है। अनीश्वरवादी जैन धर्म के प्रवर्तक को भी "भगवान" महावीर कहता है। किन्तु क्या असत्य को असत्य न कहा जाये ? समाज को न बताया जाए की सही मार्ग

(वैदिक मार्ग ही उचित है) क्या है।

सत्य कटु होने के कारण लोगों को चुभता है। सत्य कहने के लिए साहस चाहिये जिसमे आर्यसमाज हमेशा आगे है।

पंच महायज्ञ- प्रत्येक ग्रहस्थ को यथासम्भव निम्न पाँच यज्ञ करने चाहिए। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् निराकार ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए आत्मालोचन।

देवयज्ञ अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण एवं दान (हवन)।

पितृयज्ञ अर्थात् माता, पिता, आचार्यों के ऋण से उऋण होना।

अतिथि यज्ञ अर्थात् सदाचारी व परोपकारी जनों का सम्मान व सहयोग करना।

बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् पशु पक्षियों का पालन पोषण।

गुरु- जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है।

हमारे गुरु मात्र वेद हैं। हम अपना दिशा निर्देशन वेदों से प्राप्त करते हैं। जो जो वैदिक हो उसे ग्रहण करते है और अवैदिक का त्याग करते हैं। ऋषि दयानंद जी के प्रति अपने हृदय में सम्मान रखते हैं किन्तु कभी भी कहीं भी ऋषि की पूजा नहीं करते हम उनके द्वारा दिखाए गए सत्य मार्गो का अनुसरण करते हैं।

धर्म- धर्म वृत्तिमूलक आचरण परक है। दस वृत्तियों धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच (स्वच्छता), इन्द्रियनिग्रह, धी (विवेक युक्त बुद्धि), विद्या, सत्य एवं अक्रोध से युक्त जीवन ही धार्मिक जीवन है।

श्राद्ध- ईश्वरोपासना, स्वाध्याय एवं सदाचरण करते हुए जीवित माता-पिता, गुरुजनों एवं वृद्धजनों की सेवा करना ही श्राद्ध है।

स्वर्ग-नरक- स्वर्ग नरक कोई विशेष स्थान नहीं है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दु:ख विशेष का नाम नरक है; और वे भी इसी संसार में शरीर के साथ ही भोगे जाते हैं।

पूजा का अर्थ- जड़ पदार्थों का उचित रख-रखाव व सदुपयोग ही उनकी पूजा है। तुलसी और पीपल आदि के वृक्ष ज्वर आदि रोगों में लाभदायक हैं अतः इनकी रक्षा होनी चाहिए।

मुहूर्त- जिस समय चित्त प्रसन्न हो तथा परिवार में सुख शांति हो वही शुभ मुहूर्त है। ग्रह नक्षत्रों की दशा देखकर पण्डितों से शादी ब्याह, कारोबार आदि के मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है। दिनों का नामकरण हमारा किया हुआ है भगवान का नहीं।

अतः आप से अनुरोध है कि आप अपने बच्चों व परिवार सहित आर्य समाज में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित हों। ■■

महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द का जन्म 1824 तथा स्वर्गवास 1883 ईस्वी में हुआ। उनका जीवनकाल 59 वर्ष का रहा। उन्होंने 36 वर्ष की आयु में 1860 में गुरु विरजानन्द के पास विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। महर्षि ने जो कुछ ठोस कार्य किया उसके पश्चात् किया। इस प्रकार उन्हें ठोस कार्य करने का समय कुल 22–23 वर्ष मिला जिसमें उन्होंने कुछ वर्ष तपस्या में बिताये और बचे हुए समय में देश के कोने–कोने में जाकर वैदिक–धर्म का प्रचार किया, वेदों का भाष्य किया, अनेक लघु पुस्तिकाएँ लिखी, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार–विधि तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका जैसे विशालकाय एवं मौलिक ग्रन्थों की रचना की। इनमें से एक–एक ग्रन्थ सब काम छोड़कर जीवन खपा देने के लिये काफी था, फिर इतने थोड़े समय में इतना काम कर जाना महर्षि दयानन्द जैसे आदित्य ब्रह्मचारी के लिये ही सम्भव था। वैदिक–संस्कृति के उपासकों के लिये जो कुछ उपयोगी था वह सब कुछ समेट कर महर्षि ने अपने ग्रन्थों के रूप में हमें दे दिया।

मानव–जीवन के दो पक्ष हैं–सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक। महर्षि दयानन्द ने अपने समय के चिन्तकों के मस्तिष्क में मौलिक तथा रचनात्मक विचारों से हल–चल मचा दी। उन्होंने जहाँ रूढ़िवाद तथा मतवाद पर कुठाराघात किया वहाँ पश्चिम से उफन रहे भौतिकवाद को भी ठण्डा कर दिया। इन दोनों के स्थान में उन्होंने भारत के ऋषि–मुनियों की प्राचीन वैदिक संस्कृति की प्राण–प्रतिष्ठा की जिसे स्थिर तथा मूर्त रूप देने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ लिखा। यह उनका सैद्धान्तिक कार्य था। मानव के इस नव–निर्माण के विचार को क्रियात्मक रूप देने के लिये उन्होंने 'संस्कार विधि' ग्रन्थ की रचना की। 'सत्यार्थ प्रकाश' उनको विचारधारा का सैद्धांतिक अर्थात् विचारात्मक पक्ष है 'संस्कार विधि' उसी विचारधारा का व्यावहारिक अर्थात् क्रियात्मक पक्ष हैं।

मन्त्रों के प्रारम्भ में 'ओ३म्' का उच्चारण क्यों करते हैं–

–डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री

ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनन्त है। अतः इनके नाम भी अनन्त हैं। किन्तु सभी ग्रन्थों में ईश्वर को ओ३म् नाम से ही स्मरण किया गया है।

'ओ३म्' में तीन अक्षर हैं-अ, उ, म्, जब हम 'अ' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ खुल जाते हैं। इस प्रकार हम ईश्वर के उस स्वरूप को याद करते हैं, जिससे सृष्टि बनती है। यह सूचक है, सृष्टि उत्पत्ति का।

जब हम 'उ' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ गोलाकार रूप धारण कर लेते हैं, जैसे मानो ईश्वर ने अपने गर्भ में इस सम्पूर्ण चर-अचर जगत् को अपने गोलाई में धारण किया हो।

और जब हम 'म्' का उच्चारण करते हैं तो हमारे होंठ पुनः बन्द हो जाते हैं। हम याद करते हैं ईश्वर के उस प्रचण्ड स्वरूप को जोकि इस सम्पूर्ण सृष्टि को मानो बन्द कर देते हैं। इस प्रकार ये तीनों ही अक्षर उस भगवान् के उत्पत्ति-स्थिति- प्रलय के सूचक हैं।

अकार से ब्रह्म का, उकार से जीव का और मकार से प्रकृति का ग्रहण होता है। परमात्मा स्वतन्त्र है। जीव भी कर्म करने में स्वतन्त्र है। परन्तु प्रकृति जड़ होने के कारण चेतन ईश्वर और जीव के बिना कुछ नहीं कर सकती, इसलिए मकार स्वर वर्ण के बिना उच्चरित होता है तो प्रकृति भी मानो इन दोनों के बिना कुछ कार्य नहीं कर सकती।

नवम्बर 2023 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
05	डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (9999426474)	सभ्यता और संस्कृति में क्या भेद है?
12	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	दीपावली का महत्व
19	डॉ. उमा आर्या (8882387821)	जीवन में कर्म की आवश्यकता क्यों है?
26	श्री लक्ष्मकीकान्त (9868418419)	भजन

[बालकों को कैसी शिक्षा करें]

–व्यवहारभानुः

प्र. –अपने सन्तानों के लिये माता, पिता और आचार्य शिक्षा करें ?

उ. – मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद। (शतपथब्राह्मण)

अहोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता, पिता और आचार्य के सम्बन्ध में हो क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। ये अपने सन्तान जौर विद्यार्थियों को बोलने, खाने, पीने, बैठने, उठने, वस्त्र धारण करने, माता-पिता आदि के मान्य करने, उनके सामने यथेष्टचारी न होने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि के लिये प्रयत्न से नित्यप्रति उपदेश किया करें और जैसा-जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाय, वैसी-वैसी उत्तम बात सिखलाते जायें। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों को पाँच व आठ वर्ष की अवस्था पर्यन्त माता-पिता और इसके उपरान्त आचार्य की शिक्षा होनी चाहिए।

प्र. –क्या जैसी चाहें वैसी शिक्षा करें?

उ. – नहीं, जो अपने पुत्र, पुत्री और विद्यार्थियों को सुनायें कि सुन मेरे बेटे, बेटियाँ और विद्यार्थी ! तेरा शीघ्र विवाह करेंगे, तू इसकी दाढ़ी-मूंछ पकड़ ले, इसकी जटा पकड़ के ओढ़नी फेंक दे, धौल मार, गाली दे, इसका कपड़ा छीन ले, ओढ़ना वा टोपी फेंक दे, खेल-कूद, हँस, रो, तुम्हारे विवाह में फुलवारी निकालेंगे इत्यादि कुशिक्षा करते हैं, उनको माता-पिता और आचार्य न समझना चाहिये किन्तु सन्तान और शिष्यों के पक्के शत्रु और दु:खदायक हैं क्योंकि जो बुरी चेष्टा देखकर लड़कों को न घुड़कते और न दण्ड देते हैं, वे क्योंकर माता, पिता और आचार्य हो सकते हैं! क्योंकि जो अपने सामने यथातथा बकने, निर्लज्ज होने, व्यर्थ चेष्टा करने आदि बुरे कर्मों से हटाकर विद्या आदि शुभ गुणों के लिये उपदेश नहीं करते, न तन, मन, धन लगा के उतम विद्या व्यवहार का सेवन कराकर अपने सन्तानों को सदा श्रेष्ठ करते जाते हैं वे माता, पिता और आचार्य कहाकर धन्यवाद के पात्र कभी नहीं हो सकते और जो अपने-अपने सन्तान और शिष्यों को ईश्वर की उपासना, धर्म, अधर्म, प्रमाण, प्रमेय, सत्य, मिथ्या, पाखण्ड, वेद, शास्त्र आदि के लक्षण और उनके स्वरूप को यथावत् बोध करा और सामर्थ्य के अनुकूल उनको वेद-शास्त्रों के वचन भी कण्ठस्थ कराकर विद्या पढ़ने आचार्य के अनुकूल रहने की रीति जना देवें कि जिससे विद्या-प्राप्ति आदि प्रयोजन निर्विघ्न सिद्ध हों वे ही माता, पिता और आचार्य कहाते हैं।

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्साल के फिज़ियोथैरेपी विभाग का उद्घाटन समारोह

17 सितम्बर 2023 (रविवार)

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्साल के फिज़ियोथैरेपी विभाग का उद्घाटन दिनांक 17 सितम्बर, 2023 (रविवार) को धूम धाम से सम्पन्न हुआ।

तनेजा फाउण्डेशन की ओर से फिज़ियोथैरेपी की नवीनतम मॉडल की नई मशीनें दी गई। उद्घाटन के पश्चात् जलपान की व्यवस्था की गई थी।

जुलाई 2023 से 27 अक्टूबर 2023 तक प्राप्त दान राशिः—

नाम	राशि
Sh. Sunil Kapoor	35,000/-
Sh. Raman Mehta	25,000/-
Smt. Usha Marwaha	11,700/-
Sh. V.K. Chadha - Late Sh. O.P Chadha & Smt. Suraksha Chadha	11,000/-
Sh.Arun Bahl	10,200/-
Sh.Narender Sarup Kalra	10,000/-
Smt .Satish Sahai	8,500/-
Sh. Anil Kumar Bahl	7,600/-
Smt. Indu Wadhwa	6,800/-
Sh. Anoop Bahl - Smt. Anureet Bahl	5,600/-
Sh. Rajender Kumar Verma	5,600/-
Sh. Arvind Kaila	5,100/-
Smt. Mukta Pall	5,100/-
Sh. K.L. Jawa - Smt. Nisha Jawa	5,100/-
Smt. Neera Bahl - Sh. Sunil Kumar Bahl	5,100/-
Smt. Manju Sachdeva	5,100/-

नाम	राशि
Sh. Ajay Kapoor	5,100/-
Smt. Renu Chaudhri	5,100/-
M/s Munjal Showa Ltd - Sh. Yogesh Munjal	5,100/-
Sh. Ajay Kapoor - Smt. Rekha Kapoor	5,100/-
Sh. Rajiv Srivastava	5,000/-
Smt Raksha Puri	5,000/-
Sh. Atam Prakash Rellin & Sh. Sanjay Rellin	5,000/-
Sh. Satish Kumar Sood	5,000/-
Smt. Vanita Kapoor	4,350/-
Smt. Sudesh Chopra	4,350/-
Sh. Subash Amar - Sh. Sanjay Amar	3,600/-
Sh. Neeraj Khattar	3,100/-
Sh. Suhil Kumar Jolly	3,100/-
Smt. Renu Sehgal	3,100/-
Smt. Neera Bahl-Sh. S.K. Bahl	3,100/-
Smt. Saroj Abrol & Sunil Abrol	3,100/-
Sh. Prem Krishan Bahl	3,100/-

नाम	राशि
Smt Sudha Garg	3,100/-
Sh. Tilak Raj Arya	3,100/-
Sh. Pratap Guliani	3,100/-
Sh.Vijay Bhatia	3,100/-
Dr. Vinod Malik	3,100/-
Dr.S.S. Yadava	3,000/-
Smt. Amla Thukral	2,500/-
Sh. Shiven Khera - Sh. Vidhya Sagar Sarin	2,100/-
M/s Precision Tools & Component	2,100/-
Sh. Manish Arya	2,100/-
Sh. Suman Chopra & Sh. Vinod Chopra	2,100/-
Sh. Mahesh Kumar Arya	2,100/-
Smt. Shashi Mehta	2,100/-
Sh. Surender Wadhwa	2,100/-
Sh. Ashok Chopra	2,100/-
Istri Samaj Kalka JI	2,100/-
Dr. Mona Bhatnagar	2,100/-
Arya Samaj G.K.II	2,100/-

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
Sh. Vijay Kapoor	2,100/-	Sh. Suresh Gupta	1,100/-	Istri Samaj , East of Kailash	1,000/-
Smt. Sunita Wadhwa	2,100/-	Smt. Abha Kumar	1,100/-	Smt. Jyoti Tangri	1,000/-
Smt. Sushil Gulati	2,100/-	Arya Samaj 2nd C Lajpat Ngr	1,100/-	Sh. Manish Arya	1,000/-
Sh. Anil Malhotra	2,100/-	Daskshni Delhi Mahila Satsang	1,100/-	Sh. Bhupender Nath -	1,000/-
Sh. Sunil Kumar Mehta	2,100/-	Smt .Radha Nagpal	1,100/-	Sh. Amit Judge	
Sh S.C. Saxena	2,100/-	Sh. Praveen Gupta	1,100/-	Sh. Vijay Sabharwal	1,000/-
Dr. Sunita Malik	2,000/-	Sh. Divij Gambhir	1,100/-	Sh. Mohan Narang	1,000/-
Sh. Umesh Khurana	2,000/-	Smt. Manjula Gulati	1,100/-	Sh. V.K. Chopra -	1,000/-
Master Dhyom Sharma -	1,600/-	Smt.Shashi Sondhi	1,100/-	Smt. Rama Chopra	
Smt. Savita Sharma		Sh. Deepak Rastogi	1,100/-	Smt. Neha Arya -	1,000/-
Col. Gopal Verma	1,500/-	Smt. Usha Madan	1,100/-	Sh. Manish Arya	
Sh. Ashok Chopra	1,500/-	Sh. Narender Wadhwa	1,100/-	Smt. Vinita Sethi	501/-
Smt. Anchal Bahl	1,500/-	Sh. Rama Bajaj	1,100/-	Sh. Sugreev Bidhuri	500/-
Sh. Narender Wadhwa -	1,500/-	Sh. Amar Singh Pahal	1,100/-	Sh. Mukesh Gupta	500/-
Smt. Neha Kapoor		Smt. Shashi Rawat	1,100/-	Sh. K.K. Uppal	500/-
Sh. Mool Raj Arora	1,500/-	Smt. Sudha Garg	1,100/-	Smt. Anjana Guta	500/-
Sh. Avinash & Anupam Bhasin	1,500/-	Smt. Shanta Rehani	1,100/-	Sh. Vijay Sethi	500/-
Sh. V.K. Ghai	1,500/-	Sh. N.K. Kapoor	1,100/-	Sh. Vishnu Deepak	500/-
Sh. Dhruv Bahl	1,500/-	Sh. Mool Raj Arora	1,100/-	Sh. Dharamveer Singh	500/-
Sh. Mukesh Arora	1,200/-	Sh. D.K. Magoo	1,100/-	Sh. Dinesh Malik	500/-
Sh. Rakesh Gupta	1,100/-	Smt. Pabha Verma	1,100/-	Smt. Simla	500/-
Triveni Yoga Classes	1,100/-	Smt. Neena Goel	1,000/-	Smt. Pushpa Magoo	500/-
Smt. Sunita Kohli	1,100/-	Sh. Rajinder Pal Mata	1,000/-	Arya Samaj Madangiri	500/-
Smt. Shashi Sood -	1,100/-	Kumari Kanchan Arya	1,000/-		
Sh.S.K. Sood		Sh. B.R. Malhotra	1,000/-		

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय को प्राप्त दान राशि

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
M/s OSR Shipping -	100,000/-	Sh. Ashok Kumar Paliwal	5,000/-	Smt. Savita Satsangi	2,100/-
Sh. Sameer Wadhwa		Sh. Prabodh Chander Gupta	5,000/-	Smt. Savita Khanna	2,100/-
Smt. Nidhi Jindal	7,200/-	Sh. Vijay Mehta	2,500/-	Sh. M.L. Chhabra	2,100/-
Sh. K.K. Gulati	6,000/-	Sh. Adarsh Singh	2,500/-	Smt. Sudha Sethi	2,100/-
M/s Systematic Systems	5,100/-	Sh. Vinod Rekhi	2,500/-	Sh. Rakesh Oberoi	500/-
Sh. Ravi Malhotra	5,100/-	Sh. J.P. Singh	2,500/-		

आर्य समाज महिला सत्संग को प्राप्त दान राशि

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
Smt. Uma Shashi Durga	2,100/-	Istri Samaj Sri Niwas Puri	1,100/-	Istri Arya Samaj, Amar Colony	500/-
Sh. Hardeep Kapoor	1,100/-	Smt. Satish Sahai	1,100/-	Istri Arya Samaj Jor Bagh	500/-
Smt. Kamlesh Arora	1,100/-	Smt. Amrit Paul	500/-	Smt .Usha Kukreja	500/-
Smt. Krishna Thukral	1,100/-	Istri Samaj , Malviya Nagar	500/-		

वैदिक सैन्टर के लिए दान राशि:

नाम	राशि
Smt. Renu Chaudhri	500,000/-
Smt. Mona Bhatnagar	21,000/-
Sh.Abhishek Bhatnagar	2,000/-

OPG X-Ray मशीन के लिए दान राशि:

नाम	राशि
M/s Hero Fincorp Pvt. Ltd	610,000/-
M/s A.G. Industries Pvt. Ltd	610,000/-
M/s Hero Motocorp Ltd.	610,000/-

वैदिक सैन्टर में कुर्सियों के लिए दान राशि:

नाम	राशि
Smt. Manjula Gulati	25,000/-
Smt. Abha Kumar	25,000/-

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला :

नाम	राशि
Smt. Suman Kamlesh Chopra	1,00,000/-
Abrol Scholarship Award for Girls	80,000/-
Smt. Poonam Berry	2,500/-
Smt. Anchal Bahl	1,000/-
Sh. Aditya Bahl	1,000/-

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

Maharishi Dayanad Saraswati Marg, B/31, Kailash Colony, New Delhi-48 ● Tel.: 46678389

An ISO 9001:2015 Certified Institution

CONSULTANT'S OPD TIMINGS

UPDATED ON 1st NOV. 2023

GENERAL & LAPAROSCOPIC SURGERY		
Dr. (Prof.) Vinod Kumar Malik	09:00 am – 10:00 am	Friday (By Appointment)
NEUROLOGY		
Dr. K.C. Sharma	10:00 am – 12:00 noon	Tuesday, Thursday
CARDIOLOGY		
Dr. Anil Sabharwal	12:00 Noon – 01:00 pm	Tuesday, Thursday, Saturday
DENTAL		
Dr. Priya Nagrath	11:00 am – 01:00 pm 04:00 pm – 06:00 pm	Monday to Saturday Mon, Wed, Thu. (By Appointment)
Dr. Sheena Pall	09:00 am – 01:00 pm	Monday to Saturday
Dr. Sumit Dubey	10:00 am – 01:00 pm	Tuesday, Thrusday
Dr. Pragya Sharma	09:00 am – 01:00 pm	Monday to Saturday
E.N.T.		
Dr. P.M. Kapoor	09:30 am – 11:00 am	Tuesday, Thursday
EYE		
Dr. Deepa Kapoor	09:30 am – 11:00 am 11:00 am – 12:30 pm	Tuesday Thursday, Saturday
Dr. Binita Verma Tyagi	10:30 am – 12:00 noon 09:00 am – 11:00 am	Monday Wednesday, Friday
SKIN		
Dr. Dharamvir Singh	10:30 am – 11:30 am	Saturday
GENERAL PHYSICIAN		
Dr. Mohan Gandhi	10:00 am – 01:00 pm 04:00 pm – 06:00 pm	Monday, Wednesday, Friday Mon, Wed, Fri (By Appointment)
Dr. Abhishek Goyal	09:00 am – 01:00 pm	Saturday
Dr. Sudhir Kapoor	11:00 am – 01:00 pm	Tuesday, Thursday
GYNAECOLOGY		
Dr. Vimla Ticku	11:00 am – 01:00 pm	Monday, Thursday
Dr. Poonam Saith	09:00 am – 11:00 am	Tuesday, Thursday, Saturday
Dr. Indira Das	10:00 am – 12:00 noon	Wednesday, Friday
PAEDIATRICS (CHILD SPECIALIST)		
Dr. Sunita Shakdher	10:30 am – 12:30 pm 12:00 noon – 01:00 pm	Monday, Saturday Wednesday
PHYSIOTHERAPY		
Dr. H.S. Sirola	09:30 am – 01:00 pm	Monday to Saturday
Dr. Ajay Kaushal	04:00 pm – 06:00 pm	Monday to Saturday
OSTEOPATH NATUROPATHY		
Dr. Shiv Singh Bhati	4:00 pm – 06:00 pm	Saturday
HOMOEOPATHY		
Dr. Reena Verma	11:00 am – 01:00 pm	Mon., Wed., Thur., Fri.
NEUROTHERAPY		
Mr. Birendra Prasad	09:00 am – 01:00 pm 04:00 pm – 06:00 pm	Monday to Saturday Monday to Saturday
ORTHOPAEDICS		
Dr. S.S. Yadava	12:00 pm – 01:00 pm	Tuesday, Thursday, Saturday
PATHOLOGY		
Dr. Parminder Singh	12:00 Noon - 01:00 pm	Monday to Saturday
Path Lab Tests	09:00 am – 01:00 pm	Monday to Saturday
ULTRA SOUND		
Dr. Pradeep Dutta	08:30 am – 09:00 am	Mon., Wed., Thur., Sat.
Dr. Komal Jain	10:00 am – 11:00 am	Tuesday, Friday
Digital X-RAY & E.C.G.	09:00 am – 01:00 pm	Monday to Saturday
ECHO	12:00 pm – 01:00 pm	Tuesday, Thursday